चौथा संसार, इन्दौर
11 MAY 2010

शिवराज की पहल ने शुरू करवाया फिर से बांध निर्माण

महेश्वर प्रोजेक्ट को लेकर पिछले तीन सप्ताह से चली आ रही उहा-पोह का अंत इतना अच्छा होगा किसी ने सोचा ही नहीं था। महेश्वर प्रोजेक्ट को लेकर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रधानमंत्री से मुलाकात करके प्रोजेक्ट की पूर्णता के जो रास्ते खोले, इससे यह साबित हुआ कि महज मुख्यमंत्री सहज और समन्वय के ही धनी नहीं है बल्कि प्रदेश की जनता के हितों के रखवाले भी है। प्रदेश की जनता के जो आडे आएगा उसका भी दमन करने से नहीं हिचकने वाले मुख्यमंत्री की पहचान भी बनी है।

केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा महेश्वर बांध के नाम पर रोक संबंधी आदेश के बाद मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान की इस मामले में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से हस्तक्षेप की गुहार कुछ रंग लाई। पखवाडे भर पहले केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने पुर्नवास का काम पूरा न होने का कारण बताकर नर्मदा पर बन रहे महेश्वर बांध पर निर्माण कार्य रोक देने का निर्देश दिया था। यह बात बिजली संकट से जूझ रहे मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान को रास नहीं आई।

उन्होंने पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश पर तुगलकी फरमान जारी करने का आरोप मढ़ा। मुख्यमंत्री ने महेश्वर प्रोजेक्ट पर लगी रोक को हटाने को लेकर प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाया और ऐसा बनाया कि आखिर जयराम रमेश को भी राम-राम याद दिला दिये। आम तौर पर भारतीय राजनीति का यह पहलू होता है कि वे नेता जनता की मदद् की बजाय अपने स्वार्थ, अपनी महत्वकांक्षाओं को तरजीह देते है। नेताओं से नेताओं के समन्वय के किस्से तो बहुत सुने थे किन्तु जनता की समस्या समन्वय से ऊपर उठेगी ऐसा पहला और अद्वितीय मामला मध्या प्रदेश ही नहीं पुरे भारत ने देखा है। क्योंकि यहां भी अगर शिवराज सिंह चौहान समन्वय रखते तो प्रोजेक्ट और पीछे चले जाता और प्रदेश की जनता बिजली की समस्या से कभी पार नहीं पाती, लेकिन शिवराज सिंह ने अपने संब्रधों, अपने रिश्तों को जनता की समस्या से छोटा माना इसलिए वे पहले तो पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश पर

गुर्राये और जब देखा कि इससे समस्या का हल नहीं होगा तो उन्होने प्रधानमंत्री तक से मुलाकात करके सरकार का पक्ष रखा। महेश्वर प्रोजेक्ट के मामले में मुख्यमंत्री को सफलता मिली वह असाधारण और न भूतो न भविष्यति है। देश के इतिहास में यह पहला अवसर होगा कि किसी प्रदेश के मुख्यमंत्री ने केन्द्र सरकार के फैसले को पलटने के लिए उसे स्वयं को मजबूर किया है। क्योंकि एक प्रदेश के मुख्यमंत्री का केन्द्र सरकार से लोहा लेना यानी हाथी और चिटी का युद्ध जैसा मामला प्रतित होता है, किन्तु जीत मदमस्त हाथी की नहीं हुई बल्कि सीधी-साधी और नैतिक रूप से मजबुत चिटी की हुई। मानो ऐसा लगता है यह कहने में कोई संकोच नहीं कि मुख्यमंत्री ने जो जयराम रमेश को करारा जवाब दिया है यह उनकी परिवक्व सोच को दर्शाता है, क्योंकि प्रदेश सरकार को बदनाम करने की तो कई कारस्तानियां हुई है लेकिन महेश्वर प्रोजेक्ट पर जिस

प्रकार का रूख उनके मंत्री जयराम रमेश और उनके मंत्रालय ने दिखाया उससे मुख्यमंत्री को यह समझने में कतई देर नहीं लगी कि केन्द्र सरकार का यह कदम अपने लिए तकलीफ देह होगा और इसे उन्होंने भले ही बुढिया मर गई हो पर मौत ने घर देख लिया। ऐसा सोचकर इस उदाहरण को आत्मसात करके ही उन्होंने हमेशा के लिए उस मौत को ही पलटा दिया जो भविष्या में मध्यप्रदेश पर यदा- कदा आती रहने की संभावनाएं बनी रहती थी।

मुख्यमंत्री के साहस को वंदन करना होगा कि उन्होंने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जैसे प्रधानमंत्री को उनके लखते जीगर मंत्री जयराम रमेश की खबर ली और प्रधानमंत्री को कन्वीन्स करवाया कि आपके मंत्री ने गलत किया। हालांकि प्रधानमंत्री भी काफी गंभीर और विद्वान शाख्सियत है, वे भी मुख्यमंत्री के सच्चे मन पर फिदा ही नही हुए बल्कि मुख्यमंत्री की बातों का उन पर गहरा असर हुआ।

खास बात यह भी देखने को मिली कि जयराम रमेश इतने हल्के- फुल्के मंत्री भी नहीं है कि कोई भी मुख्यमंत्री इन पर उंगली उठा सके, पर वो तो शिवराज सिंह चौहान का ही साहस था कि वे शेर के मुंह से मांस खींच लायें। उन्हें इसलिए भी जयराम रमेश पर जीत का सेहरा बंधा कि जहां नैतिकता और सच्चे मन की बात आती है तो सारी बाधाएं स्वयमेव ही समाप्त हो जाती है।

आखिर बाधाएं क्यों समाप्त नहीं हो क्योंकि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के मन में जनता रूपी जनार्दन ही भलाई का भाव था तो जीत सुनिश्चित हुई। महेश्वर प्रोजेक्ट के मामले में केन्द्र सरकार को अपने निर्णय को पुन: बदलने के पीछे मुख्यमंत्री की इमेज का भी बहुत बड़ा रोल रहा। क्योंकि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की इमेज महज मध्यप्रदेश तक नहीं है, उन्हे पूरे देश में नैतिक राजनीतिज्ञ का रूतबा हासिल है, उनकी सफलता में यह मुद्दा भी कारगर रहा। प्रदेश की जनता भी आभारी है कि जब नेता जनता की मनोभावनाओं पर कुठाराघात करने का कोई मौका नहीं छोड़ते ऐसे में मुख्यमंत्री के इस कदम से प्रदेश की जनता भी अपनी कालर खड़ी करने से अपने आपको रोक नहीं पा रही है। पुनः मुख्यमंत्री जी को महेश्वर प्रोजेक्ट की सफलता पर बधाई।

-पं. छोटू शास्त्री, धार